IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

Volume 11, Issue 1, January 2024

Impact Factor: 7.394

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधीजी का योगदान

Dr.Tara Choudhary

Subject-History, Barmer, Rajasthan, India

सार

महात्मा गांधी ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वह 1920 के दशक में भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस में एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में उभरे और अहिंसक सविनय अवज्ञा के अपने सिद्धांतों के लिये जाने गए।

गांधी ने वर्ष 1930 में नमक मार्च सहित कई सफल अभियानों का नेतृत्व किया था, जिसमें उन्होंने और उनके अनुयायियों ने नमक उत्पादन पर ब्रिटिश एकाधिकार का विरोध करने के लिये अरब सागर तक मार्च किया था। इस अभियान के परिणामस्वरूप भारतीय नमक अधिनियम को निरस्त कर दिया गया और ब्रिटिश सरकार ने इस संदर्भ में अधिक स्वायत्तता की भारतीय मांगों को मान लिया।

परिचय

भारत के स्वतंत्रता संग्राम को आकार देने वाली इनकी विचारधाराएँ और रणनीतियाँ:

- अहिंसा:
  - गांधी का अहिंसा का दर्शन उनकी राजनीतिक और सामाजिक मान्यताओं के मूल में था। उनका मानना था कि हिंसा केवल अधिक हिंसा को जन्म देती है और अहिंसक प्रतिरोध समाज में बदलाव लाने का एक अधिक प्रभावी तरीका है।
  - गांधी के अहिंसक दृष्टिकोण ने विश्व भर में कई अन्य नागरिक अधिकारों और मुक्ति आंदोलनों को प्रभावित किया है।
- सत्याग्रह:
  - सत्याग्रह (जिसका अर्थ है "सत्य पर टिके रहना") अहिंसक प्रतिरोध का एक तरीका था जिसे गांधी ने विकसित किया था जिसका भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया था।
  - इसमें अन्यायपूर्ण कानूनों और दमनकारी नीतियों को चुनौती देने के लिये सविनय अवज्ञा, हड़ताल, बहिष्कार और अन्य अहिंसक साधनों का उपयोग किया जाना शामिल था।
  - सत्याग्रह का उद्देश्य उत्पीड़नकर्त्ताओं के हृदय को परिवर्तित करना था और बल या जबरदस्ती के बजाय अंतरात्मा से संघर्ष करना था।
- असहयोग:
  - असहयोग एक अन्य रणनीति थी जिसका उपयोग गांधी भारत में ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने के लिये करते थे। उन्होंने भारतीयों से ब्रिटिश वस्तुओं, संस्थानों और कानूनों का बहिष्कार करने और करों का भुगतान न करने या ब्रिटिश द्वारा संचालित चुनावों में भाग न लेने का आह्वान किया था। असहयोग आंदोलन का उद्देश्य भारतीय स्वतंत्रता हेतु ब्रिटिशों पर दबाव बनाना था।[1,2,3]
- सविनय अवज्ञा:
  - सविनय अवज्ञा अहिंसक प्रतिरोध का एक रूप था जिसमें अन्यायपूर्ण कानूनों या विनियमों को तोड़ना और उन कार्यों के परिणामों को स्वीकार करना शामिल था।
  - गांधी ने वर्ष 1930 में नमक मार्च का नेतृत्त्व किया था, जिसमें उन्होंने और हज़ारों अनुयायियों ने ब्रिटिश नमक कानूनों की अवहेलना के क्रम में अपना नमक बनाने के लिये अरब सागर तक मार्च किया था।
  - गांधी की रणनीति में सविनय अवज्ञा एक शक्तिशाली उपकरण था और इसने स्वतंत्रता आंदोलन हेतु जन समर्थन जुटाने में सहायता की थी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी का योगदान अतुलनीय था। अहिंसा और सविनय अवज्ञा के उनके दर्शन तथा असहयोग एवं सविनय अवज्ञा की उनकी रणनीति और उनके नेतृत्त्व ने भारतीय जनता को एकजुट करने के साथ ब्रिटिशों को भारतीयों की मांगों को मानने के लिये मजबूर किया था। गांधी की विरासत आज भी विश्व भर के लोगों को न्याय और स्वतंत्रता के लिये लड़ने हेतु प्रेरित करती है।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

विचार-विमर्श

महात्मा गांधी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के सबसे स्वीकृत व्यक्ति हैं क्योंकि उन्होंने विशेष रूप से अहिंसक नागरिक विद्रोहों का नेतृत्व किया था। उन्होंने शुरुआत में अपना दृष्टिकोण दक्षिण अफ्रीका में संचालित किया जहां वह एक गैर-देशी वकील के रूप में काम कर रहे थे। जब गांधीजी ने गोरों के शासन में रंगीन लोगों के प्रति पूर्वाग्रहों और शोषण को देखा तो वे आहत और क्रोधित हुए।

महात्मा गांधी तब सुर्खियों में आए जब उन्होंने देश में अहिंसक मार्च की व्यवस्था की जिससे उन्हें दक्षिण अफ्रीकी नागरिकों से प्रसिद्धि और समर्थन मिला। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी की भूमिका अविस्मरणीय है क्योंकि उनकी सेवाओं ने हमें आजादी दिलाई, जिसमें सत्याग्रह आंदोलन, खिलाफत आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन आदि शामिल हैं।

स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी द्वारा अपनाई गई गतिविधियाँ

गांधी जी ने अपने शुरुआती दिनों में तीन सत्याग्रह आंदोलनों का नेतृत्व किया, यानी 1917 में चंपारण सत्याग्रह, 1918 में खेड़ा सत्याग्रह और 1918 में अहमदाबाद मिल हड़ताल । स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उन्होंने हमें जो सबसे बड़ा सबक दिया वह यह था कि कभी हार न मानें और खुद को सफल बनाने के लिए हिंसा को प्राथमिकता न दें। महात्मा गांधी के सभी महत्वपूर्ण आंदोलनों को तिथियों सहित तालिका में दर्शाया गया है।

स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी की भूमिका	आंदोलनों की तिथि
चम्पारण सत्याग्रह	1917
खेड़ा सत्याग्रह- अहमदाबाद सत्याग्रह	1917 -1918
खिलाफत आंदोलन	1919
असहयोग आंदोलन	1920
दांडी मार्च	1930
सविनय अवज्ञा आंदोलन	1930
गांधी इरविन समझौता	1931
भारत छोड़ो आंदोलन	1942

चंपारण सत्याग्रह (1917)

एमके गांधी ने स्वतंत्रता के लिए अपना संघर्ष सविनय अवज्ञा आंदोलन के साथ शुरू किया, पहला 1917 में चंपारण सत्याग्रह था। चूंकि उस समय देश में किसानों की स्थिति खराब थी, गांधी गरीब किसानों की आवश्यकताओं की जांच करने के लिए चंपारण गए। अंग्रेजों ने एक शोषणकारी व्यवस्था स्थापित की जहां किसानों को भारी कर देना पड़ता था।

- महात्मा गांधी की सत्याग्रह की तकनीक क्या थी?
- चंपारण सत्याग्रह में महात्मा गांधी की क्या भूमिका थी?

चूंकि नील की मांग बहुत अधिक थी, इसलिए उन किसानों को तिनकठिया प्रणाली के तहत नील की खेती करने के लिए मजबूर किया गया। हालाँकि, एक भारतीय होने के नाते उन्हें इस मामले को देखने की अनुमति नहीं थी। शायद गांधी ने वापस जाने से इनकार कर दिया और जनता, विशेषकर पीड़ित किसानों का समर्थन जुटाने में कामयाब रहे।

- वह इस मुद्दे को कोट तक ले गए और आश्चर्यजनक रूप से उनके साथ 2000 से अधिक स्थानीय लोग भी थे। अदालत द्वारा मामला ख़त्म करने के बाद, गांधी को अनिवार्य जांच करने की अनुमति दी गई।
- उन्होंने जमींदारों और बागवानों के खिलाफ विरोध शुरू कर दिया । उन्होंने अंग्रेजों पर सफलतापूर्वक प्रभाव डाला और सरकार किसानों का शोषण करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली तिनकठिया प्रणाली को खत्म करने पर सहमत हो गई।
- उन्होंने सरकार को इस व्यवस्था को रद्द करने के लिए मजबूर किया और किसानों को मुआवजा प्रदान किया गया।
- उनकी सफलता के बाद स्थानीय लोगों ने उन्हें बापू और महात्मा की उपाधि दी।[4,5,6]

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

खेड़ा सत्याग्रह (1918)
20वीं सदी की शुरुआत में, गुजरात को सूखे का सामना करना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप कई फसलें नष्ट हो गईं। हालाँकि, मोहन लाल पांडे ने 1917 में एक कर-मुक्त अभियान का नेतृत्व किया। इस अभियान में, उन्होंने गरीब किसानों द्वारा भुगतान किए गए करों में छूट की मांग की, भले ही उन्हें खेड़ा, गुजरात में खराब फसल या फसल की विफलता का सामना करना पड़ा हो। इस अभियान में 22 मार्च 1918 को गांधीजी शामिल हुए। आंदोलन में उनकी रुचि ने आग को प्रज्वलित किया जिसके लिए उन्होंने सत्याग्रह शुरू किया।

- गांधीजी का सत्याग्रह का विचार
- खेड़ा किसानों की मांगें

इंदुलाल याग्निक और वल्लभभाई पटेल जैसे महान नेता खेड़ा सत्याग्रह में शामिल हुए । देश के प्रमुख नेताओं और विभिन्न जातियों और नस्लों के लोगों ने उनके शांतिपूर्ण विरोध का समर्थन किया। उन्होंने अंग्रेजों को उनकी शिकायतें सुनने पर मजबूर कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने उनकी मांगें पूरी कीं और किसानों को रियायतें दीं।

अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918)
फिर, 1918 में, गांधीजी ने औद्योगिक मालिकों के खिलाफ भूख हड़ताल और सत्याग्रह के अपने हथियारों का इस्तेमाल किया। इस क्षेत्र में भारी मानसून आया था , जिससे फसलें नष्ट हो गईं और प्लेग फैल गया। इसने अहमदाबाद में 10% से अधिक लोगों की जान ले ली। श्रमिकों की स्थिति को देखते हुए, मालिक या नियोक्ता श्रमिकों को उनकी आजीविका का समर्थन करने के लिए प्लेग बोनस देते हैं। शायद महामारी ख़त्म होने के बाद नियोक्ताओं ने बोनस बंद कर दिया.

- वह स्थान जहाँ 1918 में कॉटन मिल सत्याग्रह आयोजित किया गया था
- भारत में पहली कॉटन मिल

परिणामस्वरूप, कर्मचारी उनके खिलाफ हो गए और अपने वेतन का 50% महंगाई भत्ते की मांग करने लगे। लेकिन उन्होंने इसे मजदूरों को देने से इनकार कर दिया और ये मजदूर मशहूर सामाजिक कार्यकर्ता अनुसुइया साराभाई के पास पहुंचे। उन्होंने गांधी से इस मामले को देखने का अनुरोध किया। मजदूरों की स्थिति को समझने के बाद गांधी जी ने शांतिपूर्ण भूख हड़ताल का आयोजन किया । अहमदाबाद मिल हड़ताल के परिणामस्वरूप, मालिक 35% वेतन वृद्धि देने पर सहमत हुए।

असहयोग आंदोलन (1919)
असहयोग आंदोलन 1919 से 1922 तक भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन का विरोध करने के लिए गांधी जी के नेतृत्व में हुए जन आंदोलनों में से एक था। उन्होंने स्वदेशी सिद्धांतों को अपनाने का संकल्प लिया। इसके अलावा, उन्होंने जनता को अपनी उपाधियाँ त्यागने के लिए प्रभावित किया और उनसे सरकारी कार्यालयों से इस्तीफा देने के लिए कहा। असहयोग आंदोलन की प्राथमिक मांग स्वशासन या स्वराज थी ।[7,8,9]

यह आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम के लिए आवश्यक बन गया और भारत में सांप्रदायिक सद्भाव का प्रदर्शन किया। लेकिन, उन्होंने चौरी चौरा घटना के कारण आंदोलन बंद कर दिया, जहां प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़प के कारण 22 पुलिसकर्मी मारे गए थे। हालाँकि, सीआर दास और मोतीलाल नेहरू जैसे नेता निलंबन के ख़िलाफ़ थे।

परिणाम

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में गांधी जी के समक्ष निम्नलिखित परिस्थितियाँ उपस्थित थीं-

- 19वीं सदी के अंत में देश में राष्ट्रवाद की भावना प्रबल हुई। इसका मुख्य कारण शिक्षा का प्रसार, रेल यातायात में वृद्धि, समाचार-पत्रों व प्रेस का प्रसार, पश्चिमी देशों की संस्कृति व साहित्य का ज्ञान, आर्थिक परिस्थितियाँ तथा प्रारंभिक उदारवादी नेताओं द्वारा राजनीतिक जागरूकता के लिये किये गए प्रयासों ने राष्ट्रवाद के उदय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के उदारवादी व उग्रवादी नेताओं ने जनसामान्य में राजनीतिक चेतना का प्रसार किया, इसके साथ ही कॉन्ग्रेस के संगठनात्मक ढाँचे को अखिल भारतीय स्तर पर मज़बूत किया।
- ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध संघर्ष के रूप में बंग-भंग आंदोलन में प्रयोग किये गए स्वदेशी व बहिष्कार जैसी गतिविधियों को गांधी जी ने 'सविनय अवज्ञा' व 'असहयोग आंदोलन' में प्रयोग किया।
- पूर्व के आंदोलनों में प्राप्त जन-सहयोग को गांधी जी ने अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध संघर्ष में प्रयोग किया। इन आंदोलनों में छात्र, किसान व महिलाओं ने सक्रिय योगदान दिया।
- ब्रिटिश सरकार की दमनकारी व शोषणकारी नीतियों से उत्पन्न जन आक्रोश ने गांधी जी को अंग्रेज़ों के विरुद्ध संघर्ष के लिये प्रेरित किया।
- ब्रिटिश सरकार के रौलेट एक्ट व जलियाँवालाबाग हत्याकांड के कारण गांधी जी को आंदोलनों के लिये जनसहयोग प्राप्त हुआ।

- ब्रिटिश शासन में किसानों पर अत्यधिक लगान आरोपित व किसान विरोधी नीतियों के कारण अनेक किसान आंदोलन हुए, ये आंदोलन भी स्वतंत्रता संघर्ष के साथ-साथ हुए।
- सोशलिस्ट व कम्युनिस्ट पार्टियों के उदय के चलते आमजन में आर्थिक व राजनीतिक समस्याओं के प्रति जनजागरूकता उत्पन्न हुई इस जनजागरूकता का गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन में भलीभाँति प्रयोग किया।
- द्वितीय विश्वयुद्ध ने विश्व में उपनिवेशक देशों की कमज़ोरियों को उज़ागर किया।
- आज़ाद हिंद फौज का गठन, नाविक विद्रोह आदि ने जनसामान्य में स्वतंत्रता की आंकाक्षा को प्रबल किया।
- ब्रिटेन में आम, चुनाव होने के कारण वहाँ की कंज़रवेटिव पार्टी की सरकार चुनाव से पहले भारत जैसे बड़े उपनिवेश का कोई संवैधानिक हल निकालना चाहती थी।[10,11,12]

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अनेक ऐसी परिस्थितियाँ रहीं जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से आंदोलन में सकारात्मक भूमिका निभाई। परंतु इसके साथ ही गांधी जी के सत्य, अंहिंसा व असहयोग जैसे प्रयोगों के साथ ही उनके कुशल नेतृत्व ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निष्कर्ष

असहयोग आंदोलन

अप्रैल 1919 में हुए जलियांवाला हत्याकांड के बाद देश में गुस्सा था। अंग्रेजों का अत्याचार बढ़ता जा रहा था। अंग्रोजों की दमनकारी नीतियों के खिलाफ स्वराज की मांग उठनी शुरू हुई। एक अगस्त, 1920 को महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आंदोलन की घोषणा की गई। छात्रों ने स्कूल-कॉलेज जाना बंद कर दिया। मजदूर हड़ताल पर चले गए। अदालतों में वकील आना बंद हो गए। शहरों से लेकर गांव देहात में आंदोलन का असर दिखाई देने लगा।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद असहयोग आंदोलन के दौरान पहली बार हुआ जब अंग्रेजी राज की नींव हिल गई। पूरा आंदोलन अहिंसात्मक तौर पर चल रहा था। इसी बीच फरवरी 1922 में गोरखपुर के चौरी-चौरा में भीड़ ने एक पुलिस थाने पर हमला कर दिया। भीड़ ने थाने में आग लगा दी। इस कांड में कई पुलिसवाले मार गए। आंदोलन में हुई इस हिंसा से आहत गांधी जी ने आंदोलन वापस ले लिया। इस आंदोलन ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई जागृति प्रदान की।[13,14,15]

नमक सत्याग्रह

असहयोग आंदोलन के करीब आठ साल बाद महात्मा गांधी ने एक और आंदोलन किया। इस आंदोलन से अंग्रेज सरकार हिल गई। महात्मा गांधी ने 12 मार्च, 1930 को अहमदाबाद स्थित साबरमती आश्रम से दांडी गांव तक 24 दिन का पैदल मार्च निकाला। इस मार्च को दांडी मार्च, नमक सत्याग्रह और दांडी सत्याग्रह के रूप में इतिहास में जगह मिली।

दरअसल, 1930 में अंग्रेजों ने नमक पर कर लगा दिया था। महात्मा गांधी ने इस कानून के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया। इस आंदोलन से गांधी जी नमक पर से ब्रिटिश राज के एकाधिकार को खत्म करना चाहते थे। 12 मार्च को शुरू हुआ ये ऐतिहासिक मार्च 6 अप्रैल 1930 को खत्म हुआ। इस दौरान गांधी जी और उनके साथ चल रहे आंदोलनकारी लोगों से नमक कानून को तोड़ने की मांग करते थे।

कानून भंग करने के बाद सत्याग्रहियों ने अंग्रेजों की लाठियां खाईं लेकिन पीछे नहीं मुड़े। एक साल चले आंदोलन के दौरान कई नेता गिरफ्तार हुए। अंग्रेज इस आंदोलन से घबरा गए। आखिरकार 1931 को गांधी-इरविन के बीच हुए समझौते के बाद आंदोलन वापस हुआ और अंग्रेजों की दमकारी नमक नीति वापस ली गई।

दलित आंदोलन

महात्मा गांधी जी ने 8 मई 1933 से छुआछूत विरोधी आंदोलन की शुरुआत की थी। इस दौरान महात्मा गांधी ने आत्म-शुद्धि के लिए 21 दिन का उपवास किया। इस उपवास के साथ एक साल लंबे अभियान की शुरुआत हुई। उपवास के दौरान गांधी जी ने कहा था- या तो छुआछूत को जड़ से समाप्त करो या मुझे अपने बीच से हटा दो। इससे पहले 1932 में गांधी जी ने अखिल भारतीय छुआछूत विरोधी लीग की स्थापना की थी। दलित समुदाय के लिए हरिजन नाम भी महात्मा गांधी ने दिया था। गांधी जी ने 'हरिजन' नामक साप्ताहिक पत्र का भी प्रकाशन किया था।

महात्मा गांधी और सरदार पटेल के साथ सुभाष। - फोटो : Amar Ujala

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 1, January 2024 ||

भारत छोड़ो आंदोलन

नौ अगस्त 1942 को गांधी जी ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' की शुरुआत की। मुंबई में हुई रैली में गांधी ने 'करो या मरो' का नारा दिया। आंदोलन शुरू होते ही अंग्रेजों ने आंदोलनकारियों पर जमकर कहर ढाया। गांधी समेत कई बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए। इस आंदोलन ने दूसरे विश्व युद्ध में उलझी ब्रिटिश सरकार की मुश्किलें बढ़ा दी। अंग्रेजों को आंदोलन खत्म करने में एक साल से ज्यादा का समय लग गया। यह भारत की आजादी में सबसे महत्वपूर्ण आंदोलन था। [16,17,18]

चंपारण सत्याग्रह

चंपारण सत्याग्रह भारत का पहला नागरिक अवज्ञा आंदोलन था जो बिहार के चंपारण जिले से महात्मा गांधी की अगुवाई में 1917 को शुरू हुआ था। इस आंदोलन के माध्यम से गांधी ने लोगों में जन्मे विरोध को सत्याग्रह के माध्यम से लागू करने का पहला प्रयास किया जो ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ आम जनता के अहिंसक प्रतिरोध पर आधारित था।[19,20]

संदर्भ

1. "Gandhi".
2. ^ Mahatma Gandhi, 2019 Quote: "Mahatma Gandhi, byname of Mohandas Karamchand Gandhi, (born October 2, 1869, Porbandar, India – died January 30, 1948, Delhi), Indian lawyer, politician.
3. ^ Rethinking Gandhi and Nonviolent Relationality: Global Perspectives, 2008 Quote: "... marks Gandhi as a hybrid cosmopolitan figure who transformed ... anti-colonial nationalist politics in the twentieth-century in ways that neither indigenous nor westernized Indian nationalists could."
4. ^ Pax Gandhiana: The Political Philosophy of Mahatma Gandhi, 2016 Quote: "Gandhi staked his reputation as an original political thinker on this specific issue.
5. ^ [Burton Stein A History of India] 2010
6. ^ McGregor, Ronald Stuart (1993). The Oxford Hindi-English Dictionary. Oxford University Press. p. 799. ISBN 978-0-19-864339-5. 31 August 2013 रोजी पाहिले.
7. ^ Gandhi, Rajmohan (2006). Gandhi: The Man, His People, and the Empire. p. 172. ISBN 978-0-520-25570-8. ...Kasturba would accompany Gandhi on his departure from Cape Town for England in July 1914 en route to India. ... In different South African towns (Pretoria, Cape Town, Bloemfontein, Johannesburg, and the Natal cities of Durban and Verulam), the struggle's martyrs were honoured and the Gandhi's bade farewell. Addresses in Durban and Verulam referred to Gandhi as a 'Mahatma', 'great soul'. He was seen as a great soul because he had taken up the poor's cause. The whites too said good things about Gandhi, who predicted a future for the Empire if it respected justice.
8. ^ यावर जा[a] [b] Khan, Yasmin (2007). The Great Partition: The Making of India and Pakistan. Yale University Press. p. 18. ISBN 978-0-300-12078-3. 1 September 2013 रोजी पाहिले.
9. ^ Khan, Yasmin (2007). The Great Partition: The Making of India and Pakistan. Yale University Press. p. 1. ISBN 978-0-300-12078-3. 1 September 2013 रोजी पाहिले.
10. ^ यावर जा[a] [b] [c] Brown (1991), p. 380: "Despite and indeed because of his sense of helplessness Delhi was to be the scene of what he called his greatest fast.
11. ^ The Partition of India, 2009
12. ^ Cush, Denise; Robinson, Catherine; York, Michael (2008). Encyclopedia of Hinduism. Taylor & Francis. p. 544. ISBN 978-0-7007-1267-0. Archived from the original on 12 October 2013. 31 August 2013 रोजी पाहिले.
13. ^ "Gandhi not formally conferred 'Father of the Nation' title: Govt". The Indian Express. 11 July 2012. Archived from the original on 6 September 2014.
14. ^ "Constitution doesn't permit 'Father of the Nation' title: Government". The Times of India. 26 October 2012. Archived from the original on 7 January 2017.
15. ^ Nehru, Jawaharlal. An Autobiography. Bodley Head.
16. ^ यावर जा[a] [b] McAllister, Pam (1982). Reweaving the Web of Life: Feminism and Nonviolence. New Society Publishers. p. 194. ISBN 978-0-86571-017-7. 31 August 2013 रोजी पाहिले.
17. ^ Eck, Diana L. (2003). Encountering God: A Spiritual Journey from Bozeman to Banaras. Beacon Press. p. 210. ISBN 978-0-8070-7301-8. Archived from the original on 12 October 2013. 31 August 2013 रोजी पाहिले.
18. ^ माझे सत्याचे प्रयोग, मोहनदास करमचंद गांधी, पृष्ठे ५-७
19. ^ माझे सत्याचे प्रयोग, मोहनदास करमचंद गांधी, पृष्ठ ९
20. ^ माझे सत्याचे प्रयोग, मोहनदास करमचंद गांधी, पृष्ठे २०-२२

IJARETY

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
doi
crossref
निस्केयर
NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975 Impact Factor: 7.394

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com